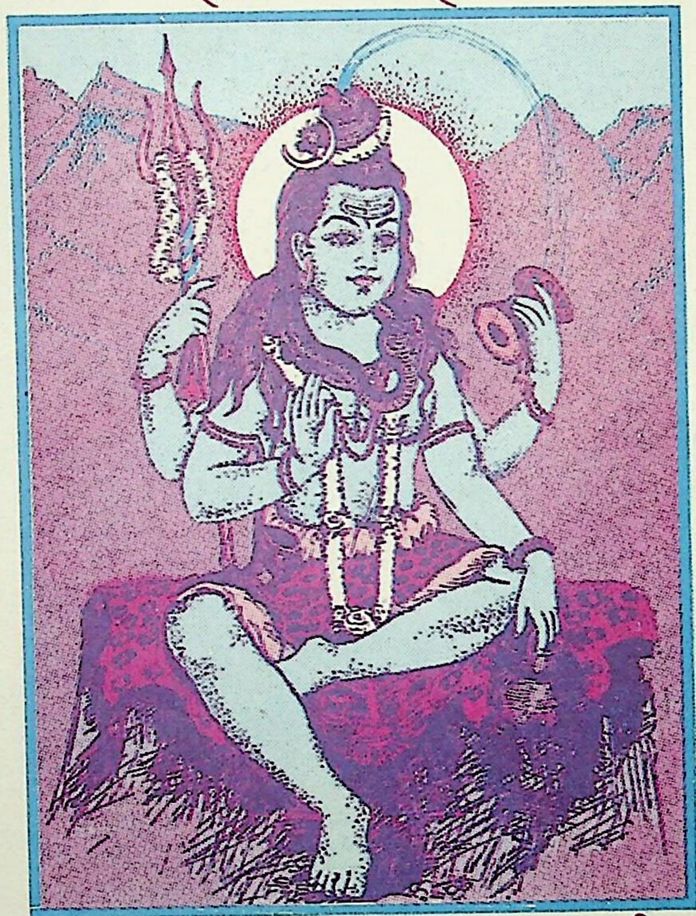
सकामशिवपूजन

हिन्दीटीकासहित



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई



श्रीः

सकामशिवपूजनविधान



(यह शिवलिंगपूजनविधान विशेषकरके उनके लिये है
कि जो प्रत्येक कामनाकी अपेक्षासे आराधन
(अनुष्ठान) किया चाहते हैं)

जिसको

प्राचीन तंत्रोंसे संग्रहकर पंडित दुर्गाप्रसाद शुक्लने
भाषार्थसहित आगरानिवासी राधाकृष्ण मिश्रकी
संमतिसे बनाया

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : मई २०१२, सम्वत् २०६९.

मूल्य : २० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their
Shri Venkateshwar Press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.



अथ विषयानुक्रमणिका

पत्र पुष्पपूजामें

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता

श्रीगणेशाय नमः

सकामशिवपूजनविधिः

भाषाटीकासहितः



नारद उवाच

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं परमं हितम् ।
सर्वं कथय मे शंभो कलौ सर्वत्र सिद्धिदम् ॥ १ ॥

शिवजीसे नारदजीने पूछा है कि, हे शंभो ! कलियुगमें सर्वत्र सिद्धि देनेवाले धर्म-अर्थ काम मोक्षके साधन परम हितरूप रहस्यको, सो आप मुझसे कहिये ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच

शृणु नारद वक्ष्यामि शिवपूजाविधानकम् ।
यस्यानुष्ठानमात्रेण सर्वसिद्धिं लभेन्नरः ॥ २ ॥

यह सुनकर ईश्वर बोले कि, हे नारद ! सुनो शिवपूजाका विधान मैं कहूँगा, जिसके अनुष्ठान करने मात्रसे मनुष्य सर्व सिद्धिको प्राप्त होता है ॥ २ ॥

शुद्धां मृदं समानीय पुनः शोध्य विशेषतः ।
लिङ्गाकारं ततः कुर्याद्यथोक्तविधिना पुमान् ॥ ३ ॥

शुद्ध मृत्तिका सम्यक् रीतिसे लाकर फिर उसको विशेष शोधन-कर अर्थात् कूट कंकर छान आदि निकालकर यथोक्तविधिसे लिङ्गका आकार बनावे (जैसी कि इसके तृतीय तंत्रमें कहेंगे) ॥ ३ ॥

पूजयेत्सुविधानेन लिंगं पार्थिवमुत्तमम् ।
अखंडं कारयेद्यत्नाद्वक्ष्यमाणैश्च नामभिः ॥ ४ ॥

उसके अनुसार पार्थिवलिंगका पूजन करे परन्तु बडे यत्नपूर्वक उत्तमतासे बनावे और कहींसे भी खंडित न होने पावे और आगे जो शिवजीके नाम कहते हैं उन्हीं नामोंसे अग्रोक्त सब काम करे जैसा विधिमें लिखा है ॥ ४ ॥

मृदाहरणं संघट्टं प्रतिष्ठा ध्यानमेव च ।
स्थापनं पूजनं चैव क्षमस्वेति विसर्जनम् ॥ ५ ॥

मृदाहरण मिट्टीका फोरना मृत्संघट्ट मिट्टी घुटेलना मर्दन करना फिर प्रतिष्ठा और ध्यान फिर स्थापन विधि फिर क्षमापन विधि और विसर्जन ॥ ५ ॥

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेवो ह्यनुक्रमात् ॥ ६ ॥

हर महेश्वर शूलपाणि पिनाकधृक् शिव पशुपति महादेव इन्हीं नामोंके अनुक्रमसे ऊपर कहे हुए कामोंको करे ॥ ६ ॥

एवमर्चयतः पुंसः पार्थिवं लिंगमुत्तमम् ।
मासत्रयेण सिद्धिःस्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ७ ॥

हे नारद ! इस प्रकारसे पार्थिवलिंगकी पूजा उत्तमतासे करते हुए पुरुषकी तीन मासमें सिद्धि होवे इसमें संशय नहीं करना ॥७॥

नारद उवाच

केन वा पूज्यते देवः पदार्थेन विशेषतः ।
केन वा विधिना तत्र यस्मात्सिद्धिं लभेन्नरः ॥ ८ ॥

इतना सुनकर नारद बोले कि विशेष कर किस पदार्थसे और कौनसी विशेष विधिसे महादेवकी पूजा की जाती है, कि जिससे मनुष्य सिद्धिको प्राप्त हो ॥ ८ ॥

ईश्वर उवाच

कमलैर्बिल्वपत्रैश्च शतपत्रैस्तथा पुनः ।
शंखीपुष्पैस्तथा देवं लक्ष्मीकामो भवेद्यदा ॥ ९ ॥

ईश्वर बोले कि जो मनुष्य लक्ष्मीकी कामना रखता हो वह कमलोंसे और बिल्वपत्रोंसे शतपत्र नामा पद्मजातिके कमलोंसे, शंखीपुष्पोंसे महादेवका यजन करे । शंखीपुष्प अर्थात् शंखाहलीके फूल जो शंखके आकारके होते हैं ॥ ९ ॥

एतैश्च लक्षसंख्याकैर्लक्ष्मीः स्यान्नात्र संशयः ।
मुक्तिकामस्तथा वै दर्भैः पूजनमाचरेत् ॥ १० ॥

इन पदार्थोंकी एक लक्ष संख्या चढानेसे लक्ष्मी प्राप्त होती है इसमें संशय नहीं। और जो मुक्तिकी कामना रखता हो वह कुशाओंसे पूजन करे ॥ १० ॥

लक्षसंख्या तु सर्वत्र ज्ञातव्या ऋषिसत्तम।
आयुःकामो भवेद्यो वै दूर्वाभिः पूजनं चरेत् ॥ ११ ॥

हे ऋषिसत्तम नारद ! लक्ष संख्या सभी वस्तुमें समझनी चाहिये और जो कोई आयु बढनेकी कामना रखता हो वह एकलक्ष दूर्वा· दलोंसे पूजन करे ॥ ११ ॥

पुत्रकामो भवेद्यस्तु धत्तूरकुसुमैर्नरः।
रक्तदंडश्च धत्तूरः पूजने शुभदः स्मृतः ॥ १२ ॥

जो मनुष्य पुत्रकी कामना रखता हो वह धतूरेके फूलोंसे पूजन करे परंतु इस पूजनमें वह धतूरा फलदायक है कि जिसके वृक्षकी अथवा फूलोंकी डंडी लाल हो ॥ १२ ॥

अगस्तिकुसुमैर्यश्च तस्य वै विपुलं यशः।
भुक्तिमुक्तिफलं तस्य तुलसीपूजनं चरेत् ॥ १३ ॥

जो कोई अगस्तिके पुष्पोंसे पूजन करे उसका बहुत बडा यश विस्तार हो जो कोई एक लक्ष तुलसीके पत्रोंसे पूजन करे उसको भोग और मोक्ष ये दोनों फल मिलें ॥ १३ ॥

अर्कपुष्पैः प्रतापश्च कुब्जकह्लारकैस्तथा ।
जपाकुसुमपूजा तु शत्रूणां मृत्युदा स्मृता ॥ १४ ॥

अर्कवृक्षके फूलोंसे जो पूजन करे उसके प्रतापकी वृद्धि हो तथा कुब्जक और कह्लार पुष्पोंसे भी प्रतापकी वृद्धि होती है, कुब्ज एक पुष्पविशेष अर्थात् अतिसुगंधिमान् फूलोंका वृक्ष होता है, उसकी यह प्रशंसा है कि चंपाके भांति पुष्पोंसे भी अशोक नामा एक पुष्प उत्तम है अशोकके सहस्र फूलोंसे भी सेवतीका एक फूल उत्तम है, सेवतीके सहस्र पुष्पोंसेभी कुब्जक नाम एक पुष्प उत्तम है, यह प्रशंसा नारसिंहपुराणमें कही है, और कह्लारकीभी सुगंधिमान् जलके फूलोंमें गिनती है श्वेतोत्पल भी प्रसिद्ध है और जपाके फूलोंसे कीहुई पूजा शत्रुओंको मृत्यु देनेवाली कही है, यह जपा अपने नामसे प्रसिद्ध है, ॥ १४ ॥

रोगोच्चाटनकामो हि करवीराणि वा हरेत् ।
बंधूकैर्भूषणावाप्तिर्जात्या वाहनसंभवः ॥ १५ ॥

रोग उच्चाटनकी कामनावाला कनेरके फूलोंसे पूजन करे और जो बंधूक पुष्पोंसे पूजन करे तो उसको अलभ्यभूषण मिलें जो जाती मालती अर्थात् चमेलीके पुष्पोंसे पूजन करे तो उसको वाहनोंका संभव हो ॥ १५ ॥

अतसीकुसुमैरेव विष्णुवल्लभतामियात् ।
शमीपत्रैस्तथा मुक्तिः प्राप्यते पुरुषेण च ॥ १६ ॥

अलसीके फूलोंसे शिवजीका पूजन करे तो विष्णुकी प्रियभक्ति पावे और जो छिंउकरके पत्रोंसे पूजन करे तो वह मुक्ति पावे॥ १६॥

मल्लिकाकुसुमैर्देवः श्रियं शुभतरां शिवः ।
यूथिकाकुसुमैः सस्यं गृहं नैव विमुंचति ॥ १७ ॥

मल्लिकानामके फूलोंसे शिवजीका पूजन करे तो शुभतरा लक्ष्मी देते हैं, और जो यूथिका (जूही)के फूलोंसे शिवजीका पूजन करे तो धान्य आदि वस्तु घरको नही छोडे अर्थात् भरी रहे ॥१७॥

कर्णिकारैस्तथा वस्त्रसंपत्तिर्जायते नृणाम् ।
निर्गुंडीकुसुमैर्लोके मनो निर्मलतां व्रजेत् ॥ १८ ॥

कर्णिकार (कणियारी सोनालु सोन्दार) इत्यादि नामोंसे प्रसिद्ध आरग्वधवृक्षभेदके पीतांबरी पुष्पोंसे पूजन करे तो वस्त्रोंकी संपत्ति उसके घरमें हो और जो निर्गुंडीके फूलोंसे शिवजीका पूजन करे तो उसके मनकी निर्मलता होती है ॥ १८ ॥

यत्कुसुमञ्च विन्देत तच्चैव शिववल्लभम् ।
चंपकं केतकं हित्वा अन्यत्सर्वं शिवेऽर्पयेत् ॥ १९ ॥

अथवा जो इन कही हुई चीजोंका मिलना दुर्लभ अर्थात् कठिन हो तो जिस किसीके फूल मिल सकते हों उनसे लक्ष संख्यासे

शिवजीका पूजन करे तो शिवजीको वे ही पुष्प प्रिय हो जाते हैं; किंतु चंपा और केतकी नाम (केवडा) यह दोनों शिवजीको नहीं चढावे इनको छोडकर और चाहे जिस किसीके फूल हों सो शिवजीको सब अर्पण करे अर्थात् चढावे ॥ १९ ॥

पुष्पाणि तिलजातानि मुक्तिदानि न संशयः ।
राजिकाकुसुमानीह शत्रूणां मृत्युदानि च ॥ २० ॥

तिलोंसे उत्पन्न हुए फूल मुक्तिदायक होते हैं, इसमें संशय नहीं । इस प्रयोगविधिमें राईके फूल शत्रुओंको मृत्युदायक होते हैं ॥ २० ॥

अतः परं तु धान्यानां फलं मे शृणु सत्तम ।
तंडुलारोपणे नृणां लक्ष्मीवृद्धिः प्रजायते ॥ २१ ॥

हे सत्तम नारद ! अब इसके आगे धान्योंका भी फल मुझसे सुनो तंडुलोंके आरोपण करनेसे मनुष्योंको लक्ष्मीजीकी वृद्धि होती है ॥ २१ ॥

षट्कटेनैव तु प्रस्थानां तदर्द्धेन तथा पुनः ।
पलद्वयं तथा तत्र लक्षमानमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

यहां तंडुलविधिमें लक्षसंख्या इसप्रकारसे होती है कि छः और तीन नौ प्रस्थोंके साथ दो पल जोड़कर सबका परिणाम एक मानकर उससे लक्षसंख्या कर लेवे ॥ २२ ॥

पूजां रुद्रविधानेन कृत्वा वस्त्रं सुसुन्दरम् ।
शिवोपरि न्यसेत्तत्र तंडुलार्पणमुत्तमम् ॥ २३ ॥

रुद्रपूजाके विधान कारणसे एक अतिसुंदर वस्त्र निरूपण करके शिवजीके ऊपर उस वस्त्रका न्यास करे उसपर उत्तम रीतिसे तंडुलोंको अर्पण करे ॥ २३ ॥

उपरि श्रीफलं त्वेकं गंधपुष्पादिभिस्तदा ।
तिलानां च तथा लक्षं महापातकनाशनम् ॥ २४ ॥

उसके ऊपर एक श्रीफल गंध पुष्प धूप दीप आदि विधिसे समर्पण करे । तथैव ऊर्ध्वोक्त प्रस्थ परिमाणसे तिलोंका एक लक्ष मान चढानेसे महापातक भी नाश हो जाते हैं ॥ २४ ॥

एकादशपलैरेव लक्षमानमुदाहृतम् ।
महापातकजं दुःखं नश्यते तत्क्षणाद्ध्रुवम् ॥ २५ ॥

उन्हीं तिलोंको ग्यारह पलोंके परिमाणसे लक्ष संख्या यदि चढावे तो महापातकसे भी उत्पन्न हुआ दुःख तत्काल क्षणमात्रमें नष्ट होजाता है यह निश्चय जानिये ॥ २५ ॥

यवपूजा तथा प्रोक्ता लक्षेण परमा शुभा ।
प्रस्थानामष्टकं चैव प्रस्थार्धं संयुतं पुनः ।
पलद्वययुतं तच्च मानमेतत्पुरातनम् ॥ २६ ॥

तथैव लक्षमानसे यवोंकी पूजा परम शुभ रीतिसे की जाय इस परिमाणसे कि साढे आठ प्रस्थोंके साथ साथ दो पल और जोडकर एक परिमाण हुआ इसकी लक्षसंख्या करके ॥ २६ ॥

यवपूजा तथा प्रोक्ता स्वर्गे सुखविवर्द्धिनी ।
प्राजापत्यं ब्राह्मणानां कर्त्तव्यं फलमीप्सुना ॥ २७ ॥

यवोंसे पूजन किया जाय तो वह पूजन स्वर्गमें सुख बढानेवाला है, इस पूजाका परिपूर्ण फल चाहनेवालेको ब्राह्मणों सहित प्राजापत्य भी करना चाहिये ॥ २७ ॥

गोधूमानां तथा पूजा प्रशस्ता ऋषिसत्तम ।
संततिं वर्धयेत्सापि यदि लक्षावधिः कृता ॥ २८ ॥

हे ऋषिसत्तम नारद ! गोधूमोंकी पूजाभी प्रशस्त है, यदि लक्ष अवधिसे की जाय तो उससे संतति बढती है ॥ २८ ॥

द्रोणार्द्धेन भवेल्लक्षं विधानं विधिपूर्वकम् ।
पुनश्च ब्राह्मणानां हि प्राजापत्यं भवेदिह ॥ २९ ॥

इस प्रकारसे कि, आधे द्रोणका एक परिमाण मानकर एक लक्ष संख्या हो और विधिपूर्वक हो और पीछे ब्राह्मणों सहित प्राजापत्य भी किया जाय ॥ २९ ॥

मुद्गानां पूजनादेव शिवो यच्छति वै सुखम् ॥ ३० ॥

और मूँगके पूजनेसे शिवजी निश्चयात्मक सुख देते हैं ॥ ३० ॥

प्रस्थानां सप्तकेनैव प्रस्थार्धेन तथा पुनः ।
पलद्वययुतेनैव लक्षमेकं विदुर्बुधाः ॥ ३१ ॥

उसका प्रमाण साढे सात प्रस्थोंके साथ दो पल और जोडकर इसका एक परिमाण मानकर एक लक्ष संख्या कही है ॥ ३१ ॥

माषाणां च तथा प्रोक्ता रोगनाशं करोति सा ।
प्रस्थानामष्टकेनैव लक्षमेकं पुरातनैः ॥ ३२ ॥

वैसेही उड़दोंकी पूजा रोगनाशिनी कही है और आठ प्रस्थोंसे एक लक्ष प्राचीनोंने कहा है ॥ ३२ ॥

प्रियंगुपूजनं देवे सर्वाध्यक्षे परात्मनि ।
धर्मार्थवर्द्धनायैव पूजा सर्वसुखावहा ॥ ३३ ॥

सर्वाध्यक्ष परमात्मा शिवदेवके प्रति प्रियंगुधान्यसे पूजन करना, धर्म और अर्थको बढानेवाला तथा सब सुख देनेवाला है॥ ३३॥

प्रस्थमेकं च यत्प्रोक्तं लक्षमेकं पुरातनैः ।
ब्रह्मभोज्यं तथा प्रोक्तमर्काणां संख्यया मुने ॥ ३४ ॥

परन्तु जो एक प्रस्थके परिमाणसे लक्ष संख्या हो यह पुरातनोंने कहा और पीछे बारह ब्राह्मणोंको भोजन कराना कहा है॥ ३४ ॥

राजिकापूजनं तस्य शत्रोर्मृत्युकरं स्मृतम् ।
प्रस्थेन पलयुक्तेन लक्षमेकं तथा स्मृतम् ॥ ३५ ॥

जो कोई राईसे पूजन करे उसके शत्रुकी मृत्यु होजानी कही है, परंतु जो एकपल जोडकर एक संख्या मानी जाय और उससे एक लक्ष संख्या हो ॥ ३५ ॥

सर्षपाणां तथा लक्षं पलैर्विंशतिसंख्यया ।
तेषां च पूजनादेव शत्रोर्मृत्युरुदाहृतः ।
विप्राणां भोजनं तत्र शतमेकोत्तरं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

वैसेही बीस पलोंकी एक संख्या मानकर एक लक्षसंख्या की-जाय तो सरसोंकी भी पूजा शत्रुको मृत्यु देनेवाली है, उसमें १०१ ब्राह्मणोंका भोजन करवाना कहा है ॥ ३६ ॥

मारीचसंभवा पूजा शत्रोर्नाशकरी स्मृता ॥ ३७ ॥
अतोपि विविधैर्धान्यैः पूजनं शंकरस्य च ।
कर्पूरै रंजितं धान्यं विविधं चार्पयेच्छिवे ॥ ३८ ॥

काली मिरचोंसे उत्पन्न हुई पूजा शत्रुका नाश करनेवाली कही है ॥ ३७ ॥ इसके उपरांतभी विविध प्रकारके धान्योंसे शंकरका पूजन होता है, उसमें कपूर आदि दिव्य सुगंधोंसे रंजित कियाहुआ धान्य शिवजीपर अर्पण करे ॥ ३८ ॥

रंगैर्नानाविधैश्चैव रंजयित्वार्पयेच्छिवम् ।
नानासुखकरी पूजा ह्येषा च ऋषिसत्तम ॥ ३९ ॥

हे ऋषिसत्तम नारद ! जो नाना प्रकारके धातु व रंगोंसे रंजित करके शिवजीपर अर्पण करे तो यह पूजा भी नानाप्रकारके सुख करनेवाली होती है ॥ ३९ ॥

इत्येतद्वचनं श्रुत्वा नारदं प्रत्यभाषत ।
स्वामिन्सर्वजगन्नाथ सर्वज्ञस्त्वं सदाशिवः ।
पयः क्षीरादिधाराणां कथयस्व फलं विभो ॥ ४० ॥

इतने वचन सुनकर नारदजी फिर बोले कि हे स्वामिन् ! सारे जगत्के नाथ तुम सर्वज्ञ हो और सदाही कल्याणरूप हो हे विभो जल दुग्ध आदि धाराओंकाभी फल कहो ॥ ४० ॥

सदाशिव उवाच

ज्वरप्रतापशांत्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ।
घृतधारा शिवे कार्या यावन्मंत्रसहस्रकम् ।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥

यह प्रार्थना सुनकर सदाशिवजी बोले कि ज्वरका प्रताप (कोप) शांत करनेके लिये जलकी धारा शिवजीको अत्यंत प्रिय और सुखकी देनेवाली होती है । और जबतक एक सहस्र मंत्र मूलका जप पूरा हो तबतक घृतकी धारा शिवजीके ऊपर करे तो इससे वंशका विस्तार अधिक होता है, इसमें संशय नहीं है ॥४१॥

प्रमेहरोगशांत्यर्थं प्राप्नुयाच्च मनीप्सितम् ।
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ४२ ॥

प्रमेह रोगकी शांतिके लिये केवल दुग्धकी धारा शिवजीपर विशेषतासे करनी चाहिये तब उस दशामें मनका ईप्सित फल प्राप्त होता है ॥ ४२ ॥

शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिजडो भवेत् ।
श्रेष्ठबुद्धिर्भवेत्सोपि कृपया शंकरस्य हि ॥ ४३ ॥

और जो कोई जडबुद्धि मनुष्य हो वह बुद्धिकी चैतन्यता चाहे तो दुग्धमें शर्करा मिश्रित करके धारा देवे वह मनुष्य शंकरजीकी कृपासे श्रेष्ठबुद्धिवाला होजाय ॥ ४३ ॥

स्वगेहे कलहो नित्यं यदा चैव प्रजायते ।
दुग्धधारा कृता चेद्वै सर्वदुःखं विलीयते ॥ ४४ ॥

जिसके घरमें नित्यप्रति कलह बना रहता हो उसका भी दुग्ध-धारा देनेसे सब दुःख नाश हो और फिर कलह कभी न हो ॥४४॥

शत्रूणां तापनार्थं वै तैलधारा शिवाय च ।
वासितेनैव तैलेन भोगवृद्धिः प्रजायते ॥ ४५ ॥

शत्रुओंको ताप देनेके लिये शिवजीपर तैलकी धारा देनी चाहिये और फुलेल आदि सुवासित तैलकी धारासे भोगोंकी वृद्धि घरमें होती है ॥ ४५ ॥

सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
मधुना यक्ष्मराजोपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ४६ ॥

सरसोंके तैलसे शिवजीपर धारा दे तो शत्रुका नाश होता है और शहदकी धारा देनेसे राजयक्ष्मा रोग जाता है ॥ ४६ ॥

धारा चेक्षुरसस्यापि नानासुखकरी स्मृता ।
गंगाजलसमुद्भूता धारा मोक्षफलप्रदा ॥ ४७ ॥

इति प्रथमतंत्रम् ।

ईख गांडेके रसकी धारा नाना भांतिके सुख करनेवाली कही है और गंगाजलकी धारा मोक्षफलकी देनेवाली है ॥ ४७ ॥ इति प्रथमतंत्रम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीयतंत्रम्

(शिवपूजनप्रयोगे आवश्यकवस्तूनि)

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्गोगृहान्मृदमानयेत् ।
अश्वत्थदर्भमूलाच्च शमीमूलात्तथैव च ॥ १)

अब दूसरे तन्त्रमें शिव पूजन प्रयोगमें आवश्यक वस्तुएं लिखते हैं । अर्थात् प्रारम्भके मुहूर्त्तसे कई दिवस पहले यह सामग्रियां इकट्ठी कर लेनी चाहिये । घोडा हाथी गऊ इनकी शालाओंसे मिट्टी खुदवाकर पृथक् पृथक् मँगा ले, वैसे ही पीपल, कुशा, छिउंकरि इनकी जडमेंसे खुदवाकर मंगा ले ॥ १ ॥

राजद्वाराम्रमूलाच्च वल्मीकासिंधुसंगमात् ।
तथा शुष्कसरात्सर्वाः खानयित्वाभिचूर्णयेत् ॥ २ ॥

राजद्वारकी मृत्तिका आम्रकी जडमेंसे भी और सांपकी बांबीमेंसे भी और दो तीन आदि नदियोंके संगमसे मंगावे वैसेही सूखे पिंडोरके तालाबमेंसे यह सभी मृत्तिका अच्छी शुभ रीतिसे मँगाकर भलीभांति चूर्णित करवा ले ॥ २ ॥

नारिकेलफलं चैकं पट्टं चैवाम्रकाष्ठकम् ।
बिल्वचंदनयोर्वापि ह्यभावे निंबकाष्ठकम् ॥ ३ ॥

एक फल नारियलका और एक पट्टा आंबकी लकड़ीका अथवा बेलका या चन्दनका होसके तो अधिक उत्तम है और जो यह लकडीका मिल न सके तो नींबका बनवा ले ॥ ३ ॥

सपादहस्तप्रमितं तदर्द्धं परभागतः ।
एकादशांगुलोच्चं तु चतुष्कोणं प्रकल्पयेत् ॥ ४ ॥

सवा हाथ लंबा और इससे आधा हाथ चौडा हो ग्यारह अंगुलकी ऊँचाईवाला हो चौकोर बनवावे ॥ ४ ॥

सपादशेटकेनापि ताम्रपात्रं विशेषतः ।
शिवलिंगस्थितेरर्थे वर्तुलं विधुबिंबवत् ॥ ५ ॥

सवासेर मानसे एक तांबेका तँबिया अवश्य करके शिवलिंगकी स्थापनाके लिये चन्द्रमण्डलके समान गोल बनवावे ॥ ५ ॥

मंडलारोपणार्थं च कदलीस्तंभकाः शुभाः ।
स्थूलाढ्याःसरलाश्चैव ह्यत्युच्चाःसप्तसंख्यकाः॥ ६ ॥

मंडल बनानेके लिये केलेके स्तंभ जो मोटे और देखनेमें शुभरूप हो सीधे हों ऊंचे हों और संख्यामें ग्यारह यद्वा न्यूनतर सात हों ॥ ६ ॥

नवाम्रतरुजाः शाखाःसुदीर्घाःसरलाःशुभाः ।
सुपुष्पलघुवृक्षाश्च घ्राणतर्पणकारणाः ॥ ७ ॥

आंबके नवीन वृक्षकी एक शाखा जो कुछ मोटी और लम्बी तथा सीधी और शुभरूप हो सुगंधिद्वारा घ्राणतर्पणके कारण छोटे छोटे पुष्पजातीके वृक्ष जो फूले हुए फूलोंसहित जो एक जगहसे उठकर दूसरी जगह लग सकते हों ऐसे पांच सात नौ ग्यारह पर्यन्त जो कुछ हाथ आ सकें वे भी उस मण्डलके चारों ओर लगवा दे ॥ ७ ॥

कलशोऽथ मृद्भांडानि संख्यया दश पंच च ।
सुसूक्ष्मं रजनीचूर्णं पंचपल्लवकानि च ।
तोरणानि विचित्राणि सपुष्पफलकान्यपि ॥ ८ ॥

कलश एक सप्तधातुका अथवा मृत्पात्रका हो मिट्टीके पात्र (हांडी) संख्यामें पन्द्रह यह केवल सामग्री धरनेके काम आवेगी और बहुत महीन पिसा हुआ हरिद्राका चूर्ण अनुमानसे छटांक एक और पंचपल्लव विचित्र बंदनवार फलपुष्पोंसे युक्त हो ॥ ८ ॥

पंचरत्नं पताका च हनुमन्मूर्तिसंयुता ।
शुभ्रवस्त्रा शुभाकारा तदर्थं दंडमुत्तमम् ॥ ९ ॥

पांचरत्न और एक पताका जो हनुमानजीकी मूर्तिसे संयुक्त हो श्वेत वस्त्रसे बनी हो शुभ आकारसे बनाई हो उसके लिये एक उत्तम दंडभी मँगवावे जिसमें खडी की जाय ॥ ९ ॥

सूत्रं च रक्तपीतं वा गोमयं पीतमृत्तिका ॥ १० ॥
रोचनाऽप्यक्षतान्येव सर्षपः पीतवर्णकः ।
दुग्धं गंगोदकं चैव ह्युपवीतानि चंदनम् ॥ ११ ॥

सूत्र काला वा लाल या पीत और गऊका गोबर और पीली मिट्टी यह मंडलके लेपमें काम आवेंगे ॥ १० ॥ रोचना अर्थात् रोली या कुंकुमआदि और अक्षत अर्थात् चुगेहुये तंडुल अखंड लक्षणवाले और पीली सरसों गऊका दुग्ध गंगाजल जनेऊके जोडे अर्थात् एक नित्यके हिसाबसे जितने आवश्यक हों चंदनका मूठा ॥ ११ ॥

पुष्पाणि करवीराणि बिल्वपत्राणि नित्यशः ।
दूर्वांकुराणि धत्तूरफलपुष्पाणि नित्यशः ॥ १२ ॥

कनेरके पुष्प और बिल्वपत्र यह दोनों नित्यही मँगवाने चाहिये और दूबके नाल अच्छे अंकुरके समान कोमल २ और सुहावने आकारवाले धतूरेके फल और यह भी नित्य मँगावे ॥ १२ ॥

अष्टगंधं सुदीपौ द्वौ गोघृतं वर्तिकास्तथा ।
कर्पूरं चैव नैवेद्यं फलानि विविधान्यपि ॥ १३ ॥
पूगीफलं लवंगानि तांबूलसहितानि वा ।
नित्यं जातीफलं त्वेकमुपहारार्थमाहरेत् ॥ १४ ॥

अष्टगंध धूप आदि और बहुत सुंदर बडे बडे दो दीपक यह दोही नित्य काम आते हैं अर्थात् रोज २ का मँगाना आवश्यक नहीं गऊका घृत दीपकोंको और हवनादिमें भी काम आयेगा वह इकट्ठा मँगवाना तथा रुईकी बत्तियां और कर्पूर नैवेद्य यथाशक्ति और यथाकार्यके अनुमानसे औरभी विविध भांतिके फल भी उपहार हेतुसे मँगावे ॥ १३ ॥ सुपारी एक अथवा दो रोज २ और लवंगें पृथक् और तांबूलके भी साथ चाहिये नित्य प्रति पूजाके पश्चात् बलि उपहार देनेके निमित्तसे एक जातीफल अर्थात् इकट्ठे रोजके हिसाबसे मँगा रक्खे ॥ १४ ॥

यत्पदार्थं तु मुख्यत्वात्कार्यसिद्धौ विनिश्चितम् ।
रुद्रीणांसंख्यया नित्यमेकविंशाधिकं शतम् ॥१५॥
अथवैकादशान्येव शतानि परिकल्पयेत् ।
अस्याग्रे तु यथा कार्यं गौरवं लाघवं तथा ॥१६॥

जो कुछ पदार्थ पहले तंत्रमें कहा हुआ कार्यसिद्धिके लिये मुख्यतासे निश्चय किया हो वह ग्यारह ग्यारहकी रुद्रियोंकी संख्यासे

नित्यप्रति एक सौ इक्कीस १२१ रुद्री लेना चाहिये ॥ १५ ॥ अथवा ग्यारह सौ कल्पना करे इसके आगे जैसा कार्य हो भारी वा हलका हो वैसाही पदार्थ इकट्ठा करे ॥ १६ ॥

तावत्संख्याक्षतान्येव दशांशं हवनं चरेत् ।
हव्यं सशर्करं चैव सुचूर्णितफलैर्भवेत् ॥ १७ ॥
शुष्कैर्नानाविधैरेव नानादेशीयसंभवैः ।
सपादपादसेरं तु नित्यमानं विधीयते ॥ १८ ॥
पालाशं चाम्रजं वापि हव्यकाष्ठं समानयेत् ॥ १९ ॥

उतनी संख्याके अक्षत भी होने चाहिये और जपसे दशवें भागका हवन करे–हवन करनेका हव्य बराबर मानसे शर्करासहित अच्छे चूर्ण किये हुए सूखे फलोंसे बनावे ॥ १७ ॥ जो अनेक देशोंमें अनेक प्रकारकी मेवाके नामसे आते हैं उस मेवा चूर्णका मान नित्यप्रति सवा पाव ऽ।–करना चाहिये और इसकी बराबर शर्करा ॥ १८ ॥ हवन करनेकी लकडी ढाक अथवा आँबकी मँगावे ॥ १९ ॥

नवग्रहाणां प्रीत्यर्थे समिधो नवसंख्यकाः ।
प्रादेशमात्राः सरलाः सुस्निग्धास्त्वचकंडिता ॥ २० ॥
अर्कः पलाशखदिरावपामार्गोथ पिप्पलः ।
औदुम्बरः शमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात् ॥ २१ ॥

नवग्रहोंकी प्रीतिके लिये नौ समिध हों लंबी पहुँचासे लेकर बीचकी अंगुली पर्यंत प्रादेशमात्र और सीधी हों चिकनी हों किंतु दाग दगीली खर्दरी न हों और छालि जिनकी कूटपीट दी गई हो जिसमें घी प्रवेश होसके ॥ २० ॥ नव समिधोंके यह नाम हैं एक १ तो आकवृक्षकी, २ ढाक वृक्षकी, ३ खैरकी, ४ अपामार्ग अर्थात् अंधीझारा जिसको चिटचिटा भी किसी देशमें कहते हैं उसकी, ५ पीपरकी, ६ गूलरकी, ७ छिंउकरकी, ८ दूबकी, ९ कुशाकी यह सब सूर्यादि ग्रहोंके क्रमसे एक एक समिध सबकी समझ लेनी, यह पहले दिवस एक दिन काम आवेगी ॥ २१ ॥

नववस्त्रं शुभवर्णं हस्तैः सार्धद्वयोन्मितम् ।
मंडपाच्छादनार्थं च शुभ्रं मंडपसंमितम् ।
पुष्पदामादिकं नित्यं पूर्वतः परिसंचयेत् ॥ २२ ॥

नवीन सफेद वस्त्र हाथोंसे ढाई २॥ हाथ नपा हुआ पहले दिवस यही नित्यप्रति पूजनमात्रमें सब अवश्य काम देता है मंडपके भी आच्छादनके लिये सफेद वस्त्र मंडपके तुल्य चौकोर जैसा उचित हो, फूलमाला वंदनवार आदि नित्यप्रति पहले मंगाकर संचय करे ॥ २२ ॥

अथ आचार्यवरणविधि ।

आचार्यवरणार्थं वा पैत्तलं च कमंडलुम् ।
अष्टोत्तरशती माला रुद्राक्षी चासनं शुभम् ॥ २३ ॥

गोमुखी रक्तवर्णा वा अधोवस्त्रं सुशुभ्रके ।
सौवर्णीं चांद्रिकी वापि दक्षिणा पुष्कलातथा ॥ २४ ॥
सुकुलीनाय शांताय ऋजवे सांप्रदायिने ।
दत्त्वा चैतानि वस्तूनि शिवमाराधयेत्ततः ॥ २५ ॥

अब आचार्यको वरण करनेकी विधि कहते हैं। आचार्यको वरण करनेके लिये ताम्र अथवा पीतलका लोटा एक, अष्टोत्तरी एक माला रुद्राक्षकी और बहुत सुन्दर सुखद आसन गालीचा आदिका ॥ २३ ॥ गोमुखी एक लालवर्ण अथवा पीतवर्णकी धोती धोतियोंका जोडा बहुत शुद्धवर्णका और सुवर्ण अथवा चांदीकी बहुतसी दक्षिणा उस आचार्यको समर्पण करे, जिससे वह अपने मन और हृदयकी एकाग्रतासे संतुष्टि पूर्वक पूजन करे ॥ २४ ॥ अच्छे कुलीन कुलपात्र आचार्यको, शांतप्रकृति वालेको, सीधे सरल अकुटिल स्वभाववालेको, शिवके संप्रदायवाले को यह सब वस्तु देकर फिर शिवजीका आराधन करवावे अथवा आप करे ॥ २५ ॥

अथ कालनिर्णयः

सिद्धियोगेऽमृते चैव सुमुहूर्तेथवा तथा ।
देवोत्थाने शुभे पक्षे अस्तादिकाविवर्जिते ॥ २६ ॥

उदिते जन्मलग्नेशुमुहूर्तेशौ विशेषतः ।
शुद्धेऽष्टमे द्वादशे च क्रियामादौ समारभेत् ॥ २७ ॥

अब कालका निर्णय करते हैं ।

सिद्धियोगमें अमृतयोगमें अथवा सुमुहूर्त्तनाम शांतिक पौष्टि-कादि मुहूर्त्तमें पंचांगरीतिसे देखकर अच्छे श्रेष्ठ मुहूर्त्तमें यह मुहूर्त्त भी देवोत्थानमें हो किन्तु देवशयनमें न हो शुक्लपक्षमें हो अस्त आदि दोष दशाओंसे रहित कालमें हो ॥ २६ ॥ विशेषकर जिसके निमित्तसे पूजन करना हो उस यजमानके जन्म लग्नका स्वामी उदित हो किन्तु अस्तंगत न हो और मुहूर्त्तेश भी उदित हो अर्थात् जिस लग्नमें प्रारंभ किया जाय उस लग्नका स्वामी अस्तगत न हो जन्मलग्नसे और प्रारंभके मुहूर्त्तवाले लग्नसे भी अष्टम और द्वादशस्थान शुद्ध हो अर्थात् उनमें कोई ग्रह न बैठा हो ऐसे शोधन किये हुए मुहूर्त्तमें प्रथम क्रियाका प्रारंभ करे ॥२७॥

नापत्काले ह्यातुरे च विचारः कालकृद्बुधैः ।
केवलं लग्नमात्रस्य शुद्धतामभिलोकयेत् ॥ २८ ॥
सर्वं पात्रेषु संस्थाप्य ततः पूजा समाचरेत् ।
न तावदारभेत्पूजां न यावत्संचयो भवेत् ॥ २९ ॥

परन्तु पंडितोंने यह भी कहा है कि जब कदाचित् किसी आपत्कालके हेतुसे प्रारम्भ करना हो या कर्त्ता यजमानको किसी

हेतुसे शीघ्र करनेकी आतुरता हो तब कालसंबन्धी विचार नहीं करना केवल तात्कालिक लग्नकी शुद्धता मात्र अच्छी तरह देख लेनी चाहिये ॥ २८ ॥ ऊपर कही हुई सब सामग्री पात्रोंमें यथोचित स्थापित करके पूजा करनी चाहिये। जबतक एक भी वस्तु शेष रहे तबतक पूजाका प्रारंभ न करे। क्योंकि, यदि कोई वस्तु आनेसे रहगई या देरमें आई तो उसके विना उसके आवश्यक समयपर क्रियाका अंग हीन हो जायगा ॥ २९ ॥

अथ देशस्थाननिर्णयः।

एकान्ते विजने चैव जनसंवादवर्जिते।
जलाशये स्वगेहे वा तथा देवादिमंदिरे ॥ ३० ॥

अब पूजाके स्थानका नियम करते हैं एकांत स्थान जहां किसीका आना जाना न हो, अथवा विजनस्थान जहां किसीका निवासही न हो, और मनुष्योंके संवादसे भी वर्जित हो यहां करे जलाशयके समीप जाकर करे अथवा अपने घरमें किसी एकांत कोणमें आरंभ करे अथवा देवमंदिर आदि पुनीत स्थानोंमें आरंभ करे ॥ ३० ॥

गत्वा स्नानक्रियां कृत्वा तथा नित्यक्रियां पुनः।
विधिना मंडपं कुर्यात्तत्रैव प्रथमेऽहनि ॥ ३१ ॥

वहां जाकर पहले स्नान क्रिया और नित्य क्रिया करके विधिसे मंडप रचना करे। यह रचना केवल परले दिवस करे ॥ ३१ ॥

अथ मंडपरचनाप्रारंभः

तत्रादौ कथितस्थाने शुद्धायां भूमौ गोमयमिश्रिताम्र-मूलवल्मीकमृत्तिकाभ्यां सह पीतवर्णमृत्तिकयोपलिप्य तन्मध्ये द्वाविंशतिहस्तपरिमितसीम्ना उत्तरद्वारसहितं चतुष्कोणमंडलं कुर्यात्। तस्य पूर्वसीमां पंचहस्तप्रमितां कुशमूलमृत्तिकया कुर्यात् ॥ १ ॥ तथा पश्चिमदिक्सीमां पंचहस्तप्रमितां सिंधुसंगं मृत्तिकया ॥ २ ॥

अब मंडपकी रचना कहते हैं वहां सबसे पहले उस कहे हुए स्थानमें शुद्ध भूमिपर गऊके गोबर और पीली मिट्टी और आम्र-मूलकी मिट्टी और बाँबीकी मिट्टी चारों मिलाकर लेप करे, उसमें बाईस २२ हाथकी चारों ओर सीमासे चतुष्कोगमंडल बनावे. जिसमें उत्तरमुख द्वार हो उस मंडलकी पूर्वदिशावाली सीमा पांच हाथकी मापसे और कुशमूलमृत्तिकासे प्रकल्पित करे ॥ १ ॥ वैसेही पश्चिम दिशाकी सीमा पांच हाथकी मापसे और सिंधुसंगम नाम नदी संगमकी मृत्तिकासे कल्पित करे ॥ २ ॥

एवं दक्षिणदिक्सीमा षड्ढस्तप्रमिता धेनुस्थानमृत्ति-कया ॥ ३ ॥ तद्वत उत्तरादिक्सीमा षड्ढस्तप्रमिता

वल्मीकमृत्तिकया तस्यां द्विहस्तप्रमितं द्वारं कृत्वा देहल्यां राजद्वारमृत्तिकां क्षिपेत् ॥ ४ ॥

ऐसेही दक्षिणदिशाकी सीमा छः हाथकी मापसे और गोशालाकी मृत्तिकासे कल्पित करे ॥ ३ ॥ उसीके समान उत्तर दिशाकी सीमा छः हाथकी मापसे और बाँबीकी मृत्तिकासे कल्पित करे उसके बीच दो हाथके प्रमाणसे चौडा द्वार रखकर उसकी देहलीपर राजद्वारकी मृत्तिका कल्पित करे ॥ ४ ॥

पुनर्द्वाराग्रे वामभागे सपादहस्तप्रमितां सरलां सन्मुखीभूतां गजस्थानमृत्तिकया वामभुजां कुर्यात् ॥ १ ॥ तद्वत् दक्षिणभागेपि सपादहस्तप्रमितामश्वस्थानमृत्तिकया दक्षभुजां कुर्यात् ॥ २ ॥

फिर उस द्वारके आगे बाँई ओर सीधी सन्मुख सवा हाथके प्रमाणसे और गजस्थानकी मिट्टीसे वाम भागकी भुजा बनावे ॥१॥ उसीके समान दक्षिण भागमें भी सवा हाथके प्रमाणसे और अश्वस्थानकी मिट्टीसे दक्षिणभागकी भुजा बनावे ॥ २ ॥

तत्पश्चान्मंडलमध्यदेशे वल्मीकमृत्तिकया सर्वतः सपादहस्तप्रमितं मध्यंशिखराकारमेकादशांगुलोच्चमष्टदलपद्मं यद्वा पूर्णचन्द्रमंडलवत् कैलासं विरच्य तस्योपरि-

ताम्रपात्रं निधाय अग्रभागे द्वारसम्मुखे ईशानकोणाश्रि-
तार्धविवरं वर्तुलं निखनेत् प्रादेश मात्रादप्यधिकमिति
मानम् ॥ २ ॥

उसके बाद मंडलके बीचमें बांबीकी मिट्टीसे अष्टदल पद्म शिखरके आकार बनावे अथवा पूर्णचन्द्रमंडलके समान गोल गोल कैलास कल्पित करे जो पृथ्वीसे ग्यारह अंगुल ऊंचा और सब ओरसे सवा हाथ मध्यभाग जिसका चौडा हो उसके ऊपर पूर्वोक्त ताम्रपात्र रखकर फिर उस शिखरके आगे द्वारके सन्मुख ईशान कोणकी ओरको एक गोल गोल गढेला अर्ध विवरके नामसे खोदे वह (प्रादेशमात्र) से भी कुछ सिवाय गहरा और उतनाही पेटसे विस्तारवाला सब ओरसे गोलाकार जिसमें अर्धजलका संचय होता रहे ॥ २ ॥

विवरस्य दक्षिणभागे मंडलस्येशानकोणसम्मुखे अग्नि-
स्थापनहेतुत्वात सुचूर्णितकुशमूलमृत्तिकया सार्द्धद्वय-
हस्तपरिमितसीम्ना त्र्यंगुलोच्चां चतुष्कोणवेदिकां
कुर्यात् ॥२॥ मंडलस्येशानकोणे कलशस्थापनम् ॥३॥

फिर उस विवरके दक्षिण भागमें और समस्त मंडलके ईशान-कोणके सन्मुख अग्निके स्थापन हेतुसे एक चौकोर वेदी कुटी हुई कुशमूलमृत्तिकासे बनावे जिसकी चारों सीमा मिलाकर मापनेसे

ढाई हाथका परिमाण हो, और तीन अंगुल पृथ्वीसे ऊँची हो फिर मंडलके ईशानकोणमें कलशका स्थापन करे ॥ ३ ॥

मंडलस्य पूर्वदिशायां शिवशिखरदक्षभागसमीपे चैव तीर्थावाहनहेतुत्वात् प्रादेशमात्रचतुःसीमासहितं प्रादेशमात्रागाधं च चतुष्कोणविवरं निखनेत् ॥ ४ ॥

फिर मंडलकी पूर्वदिशामें शिव शिखरके दाहिनी ओर समीपही तीर्थोंके आवाहन हेतुसे प्रादेशमात्रकी चार सीमावाला चौकोर और प्रादेशमात्र गहरा विवर खोदे ॥ ४ ॥

शिखरस्थलिंगमुत्तराभिमुखं तस्य वामभागे पूर्वाभिमुखमाचार्यासनं तयोर्मध्ये पुस्तकस्थापनाय चन्दनादिनिर्मितकाष्ठपट्टम् ॥ ५ ॥

मध्य शिखरपर स्थापित किया हुआ लिंग उत्तरमुख होना चाहिये। उस लिंगके वामभागमें पूर्वमुख आचार्यका आसन हो, लिंग और आसन इन दोनोंके मध्यभागमें पुस्तक स्थापित करनेके लिये चंदन आदि किसी काष्ठसे बनाया पूर्वोक्त पट्टा स्थापित करे ॥ ५ ॥

मंडलस्य बाह्यभौमद्वारदेशे वामभागभुजपृष्ठकक्षायां हनुमन्मूर्तिपताका दंडसहिता ॥ ६ ॥ मंडलस्य चतुष्कोणेषु चतुःसंख्यकाः कदलीस्तंभाःस्थाप्याः ससशेषा-

स्त्वथो द्वारं विनान्यासु सीमासु मध्येमध्ये ॥ ७ ॥ स्तंभा-नामुपरिसर्वतस्तोरणानि च ॥ ८ ॥

मंडलके बाहर द्वारदेशमें बामभागकी भुजासे पिछली कक्षामें हनुमान्जीकी मूर्त्तियुक्त पताका दंड सहित खडी करे ॥ ६ ॥ मंड-लके चारों कोणोंमें चार स्तंभ केलाके स्थापित करे । सातोंमेंसे बचे हुए तीन स्तंभोंको द्वारदेश छोडकर और तीनों सीमापर बीचमें लगावे ॥ ७ ॥ सब स्तंभोंके ऊपर सब ओरसे बंदनवार बांधे ॥ ८ ॥

मण्डलस्य बाह्यभूमौ चतुराशासु विशेषेण तु द्वारभागे सपुष्पलघुवृक्षाश्च ॥ ९ ॥

मंडलकी बाह्य भूमिपर चारों दिशाओंमें विशेषकर द्वारभागमें फूले हुए पुष्पोंसहित पुष्पजातीके वृक्ष छोटे छोटे लगादेवे ॥ ९ ॥

एतत्सर्वं प्रथमदिने विधाय तत्पश्चात् नित्यकार्याणि लिंगनिर्माणादीनि प्रतिदिनं पूजनप्रकारविषयकतृतीय-तंत्रानुसारेण कुर्यात् ॥ १० ॥ इति द्वितीयतंत्रम् ॥ २ ॥

यह संपूर्ण विधान पहले दिवस विस्तारसहित करके उसके बाद नित्यप्रतिके कार्य लिंगनिर्माण आदि नित्यप्रति समस्त विधि पूजनप्रकार संबंधी तृतीय तंत्रके अनुसार किया करे । जबतक या

जितने दिनमें पूर्वोक्त एक लक्षकी संख्या पूरी होसके ॥ १० ॥

इति सकामशिवपूजनविषये द्वितीयतंत्रसंपूर्तिः ॥ २ ॥

श्रीसदाशिवाय नमः

अथ तन्त्रोक्तसकामशिवपूजनप्रकारमाह । तत्रादावेकान्तस्थाने जनसंघातवर्जिते पूर्वोक्तद्वितीयतंत्रानुसारेण कृतमंडपे गत्वा कृतनित्यक्रियः नववस्त्रं परिधाय आचम्य सुघूर्णिताश्चैकादशमृत्तिकाःस्वहस्ते कृत्वा मौनमास्थाय मनसा षडक्षरेण मन्त्रेणैकादशवारं शिवं स्मृत्वा सर्वतः मंडलविषयेंऽतर्बाह्यभूमौ दशदिक्षु पक्षिपेत् । पुनश्च--अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा । यः स्मरेच्छंकरं भक्त्या सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ ॐ सदाशिवः पुनातु मां स्थानं चैतत् इत्येतन्मंत्रं पठित्वा ।

अब तंत्रोक्त सकाम शिवपूजनमें मुख्य विधि कहते हैं–वहां पहले मनुष्योंके संघातसे वर्जित एकान्तस्थानमें दूसरे तन्त्रके अनुसार बनाये हुए मंडपमें जाकर नित्यक्रिया करे, और नवीन वस्त्र पहिनकर आचमन करके दिनप्रति अच्छी कुटी हुई ग्यारह मृत्तिकाएँ मिलाकर हाथमें रखकर मौन साधिकर मनमें षडक्षर मंत्रसे ग्यारह बार शिवजीका स्मरण करके उस मृत्तिकाको मंडलके भीतर बाहर सब जगह दशोंदिशाओंमें प्रक्षेप करे । उसके बाद–अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा । यः स्मरेच्छंकरं

भक्त्या सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॐ सदा शिवः पुनातु मां स्थानं चैतत्–यह मंत्र पढते हुए ।

गङ्गोदकमिश्रितपंचगव्येनैकादशकुशाग्रभागैर्वादूर्वांकुरैर्वा-मण्डलसंस्कारं कुर्यात् । अथासनसंस्कारः पृथ्वित्वयाधृता-लोका देवित्वं विष्णुनाधृता । त्वंचधारयमांदेविपवित्रंकुरुचा-सनम् । इत्येतन्मत्रं पठित्वा पूर्वोक्तपंचगव्यादिना आसन-संस्कारं कुर्यात् ॥ तच्चशिवशिखरसमीपवर्तिवामभागेपूर्वाभि-मुखमासनस्थानमभिषिंचेत् । तत्रासनमास्तीर्योपविशेत् । उपवेशनमंत्रश्च ॥

गंगाजल मिले हुए पंचगव्यसे ग्यारह कुशाओंकी कूँची लेकर या ग्यारह दूर्वानालोंकी कूँची लेकर अग्रभागसे समस्त मंडलको छींटा देकर संस्कार करे ।

(और ध्यान रक्खे कि मिट्टी गोबरका लेप पहले दिवसके सिवाय फिर बीचमें न करे, और न उस मंडलमें मार्जनी फेरे (फिर आसनका संस्कार करे अर्थात्) पृथ्वित्वया धृतालोका०) इत्यादि मन्त्र जो मूलपाठमें लिखा है उसको पढते हुए उसी कूची से आसनका स्थान छींटा देकर संस्कृत करे। आसनका स्थान शिवशिखरके समीप वामभागमें पूर्वमुख आसन बिछाकर बैठे और बैठते समय उपवेशन मन्त्र जो मूल पाठमें आगे–

दिव्यामृतार्थमथितेमहाब्धौदेवासुरैर्वासुकिमन्दराद्यैः । भूमे-र्महावेगविघूर्णितायास्तंकूर्ममाधारगतं नमामि ॥ १ ॥ समुद्र-कांचीसविदुत्तरीया वसुंधरामेरुकिरीटभारा । दन्ताग्रतोयेसनमुद्धृता भूस्तमादिकोलं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥ इत्युपविश्यचन्दनादिकाष्ठकृतपट्टंतुशिवशिखरासनयोर्मध्यदेशे समाधाय तस्योपरिपुस्तकं न्यसेत् ।

(दिव्यामृतार्थं) इत्यादि दो श्लोकोंवाला लिखा है, उसको उच्चारण करके बैठे, फिर आसनके आगे अर्थात् शिवशिखर और आसनके बीचमें पूर्वोक्त चन्दनादि काष्ठका बना हुआ पट्टा रखकर उसपर यही पुस्तक स्थापित करे ।

अथात्मचित्तप्रकृतिशांत्यर्थमिन्द्रियाणामेकाग्रवृत्तिकरणार्थं च पुष्पांजलिं गृहीत्वास्वगुरोः स्मरणंकुर्यात् यथा--नमामिसद्गुरुंशान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम् । शिरसायोगपीठस्थंसर्वकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥ श्रीगुरुंपरमानन्दंनमाम्यानन्दविग्रहम् । यस्यसान्निध्यमात्रेणचिदानन्दायते परम् ॥ २ ॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तंयेनचराचरम् । तत्पदंदर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥ ३ ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यज्ञानांजनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥ ४ ॥ नमोस्तुगुरवेतस्मैस्वेष्टदेवस्वरूपिणे । यस्य वागमृतंहंतिविषं संसारसंकुलम् ॥ ५ ॥ प्रातः

प्रभृति सायांतंसायादिप्रातरंततः । यत्करोमिजगन्नाथतदस्तुतवपूजनम् ॥ ६ ॥ इतिगुरुंमनसाध्यात्वाप्रणम्य चपुस्तकंप्रतिपुष्पांजलिंदद्यात् ।

उसके बाद अपने चित्तकी वृत्ति शांत करने और मन आदि सब इंद्रियोंको एकाग्र करनेकेहेतु हाथमें पुष्पांजलि लेकर (नमामि सद्गुरुंशांतं) श्रीगुरुंपरमानंदं) इत्यादि छःश्लोक जो मूलपाठमे लिखे हैं, उन्हें सावधानीसे अर्थ समझते हुए पढकर गुरुका ध्यान और प्रणाम करे और पुष्पांजलि लेकर पुस्तकपर चढा दे ।

अथदिक्शोधनंकुर्यात्तद्यथा--क्रमतः पूर्वादिदशदिक्षु पीतसर्षपान् विकीर्य इमंमंत्रं पठेत् । अपसर्पंतुते भूताथेभूताभुविसंस्थिताः येभूताविघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया । पश्चात्तालत्रयमपिदद्यात् । तत्रायंमंत्रः (ॐ आंहुंफट् स्वाहा) अथतीर्थावाहनम् । तत्रतन्निमित्तकृतविवरे गंगादिजलंयथालब्धं पूरयित्वागोदुग्धेनकुशादिकृतकूर्चेनाभिषिंचन्नावाहयेत्तत्रायं मंत्रः पुष्कराद्यानितीर्थानिगंगाद्याः सरितस्तथा । आगच्छंतुमहाभागास्तिष्ठंत्वत्रशिवार्चने । तत्रकर्पूराढ्यानक्षतान् प्रक्षिप्यैव क्रमतः पठेत् ।

अथ दिग्बन्धनम्

उसके बाद दिक्शोधन करे अर्थात्–(अपसर्पंतुतेभूता) इत्यादि मंत्र जो मूलपाठमें लिखा है उसको पढते हुए एक एक

मंत्रसे थोडी थोडी पीली सरसों पूर्व आदि एक एक दिशामें फेंकता जाय। जब दशों दिशाओंमें फेंक चुके तब (ॐआंहुंफट्स्वाहा) यह मंत्र पढकर तीनवार ताल फटकावे। फिर तीर्थोंका आवाहन करे अर्थात् आवाहनके निमित्तसे शिवशिखरकी दाहिनी ओर पूर्व दिशामें जो एक विवर बनाया था, उसमें इस अग्रोक्त मंत्रको पढते हुए अक्षत आदिसे आवाहन करे, मन्त्र पुष्कराद्यानितीर्थानि गंगाद्याःसरितस्तथा। आगच्छंतुमहाभागास्तिष्ठंत्वत्रशिवार्चने। इसके बाद दिग्बंधनकरे अर्थात् कपूर लगायेहुए तंदुल इन अग्रोक्तमंत्रोंसे पूर्व आदिक्रमसे दशों दिशाओंमें फेंके यथा मंत्रः॥

ॐ शिवाय क्षितिमूर्त्तये नमः प्राच्याम् १ ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ईशाने २ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः उदीच्याम् ३ ॐ उग्राय वायुमूर्तयेनमोवायव्ये ४ ॐ भीमाय आकाशमूर्तयेनमः प्रतीच्याम् ५ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमो नैर्ऋत्याम् ६ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमो दक्षिणे ७ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः आग्नेय्याम् ८ ॐ शंकरायइंद्रमूर्तये नमः आकाशे ९ ॐ भूतेशाय शेषमूर्तये नमः पाताले १०

इति दिग्बंधनम्

ततश्च मंगलार्थं घटादिषु यथोचितं सामान्यतया केवलं गणेशपूजनं कुर्यात्। तद्यथा पूजाप्रकारः—तत ईशानकोणे

अव्रणं कलशमक्षतभूषितं स्थापयित्वा भूमिस्पर्शनमंत्रः—भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्रीं । पृथिवीं-यच्छपृथिवींदृ ँ हपृथिवींमाहि ँ सीः इति भूमिस्पर्शनम् । धान्यमसीतिधान्यम् । धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्वोदाना-यत्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वामहीनां-पयोसि । तस्योपरिकलशं स्थापयेत् । आजिघ्रकलशं मह्यात्वा-विशंत्विंदवः पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीपुनर्माविशताद्रयिः । वरुणस्येति उदकं निक्षिपेत् । वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभसर्जनी स्थोवरुणस्यऋत-सदन्यसिवरुणस्य ऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद । वसोः पवित्रमितिवस्त्रं कंठे वेष्टयेत् । वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसिसहस्रधारं देवस्त्वासवितापुनातु वसोः पवित्रे-णशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः । याः फलिनीर्या इतिफलम् । याः फलनीर्या अफला अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः । बृहस्पति-प्रसूतास्तानो मुंचंत्व ँ हसः ॥ परिवाजेतिपंचरत्नम् । परि-वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानिदा शुषे ॥ हिरण्यगर्भइतिदक्षिणाम् । हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य-जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवा-यहविषाविधेम । गंधद्वारामिति गंधम् । गंधद्वारांदुराधर्षांनित्य-

पुष्टांकरिषिणीम् । ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् । या- ओषधीरिति सर्वौषधीः । या ओषधीः पूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगं- पुरा । मनेनुबभ्रूणामह ५ शतंधामानि सप्त च स्योनापृथि- वीतिसप्तमृदः । स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ कांडात्कांडादितिदूर्वाः । काण्डात् काण्डात्प्ररो- हंती पुरुषः परुषस्परि । एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेण शतेनच ॥ अश्वत्थेव इति पंचवल्लवान् । अश्वत्थेवोनिषदनंपर्णेवावेसति- ष्कृता । गोभाजइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥ पवित्रेस्थइति- पवित्राणि। पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्वःप्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेणः पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः । पूर्णा दर्वीतितंडुलपूरितपात्रम् ! पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेवव्विक्रीणावहाइषभूर्ज शतक्रतो ॥ श्रीश्चते इति श्रीफलं निधाय । श्रीश्चते लक्ष्मी- श्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्ण- न्निषाणासुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण ॥ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठा। मनोजूतिर्जूषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टम् यज्ञ ५ समिमंदधातु विश्वेदेवासऽइहमादयंतामों ॥ ३ ॥ प्रतिष्ठ । भूर्भुवः स्वः गणेशवरुण इहागच्छ इहतिष्ठ गणानांत्वेति गणपतिं तत्त्वायामीति वरुणमावाह्य--ॐ गणानान्त्वा गणपति ५ हवा- महे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ५ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ५ हवामहे व्वसो मम । आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भ-

धम् ॥ १ ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्तेयज-मानोहविर्भिः । अहेडमानोवरुणेहबोध्यरुश ५ ससानऽआयु-ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशवरुण इहागच्छ इहतिष्ठ पंचोपचारेण-गणेशंवरुणंपूजयेत् नमस्कारम् । कलशेगंगाद्यावाहनम् । सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्य-दुरितक्षयकारकाः । ततः कलशाभिमंत्रणम् । कलशस्यमुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः । मूलेतस्यस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः । कुक्षौतुसागराः सप्त सप्तद्वीपावसुंधरा ! ऋग्वेदोथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः । अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशंतुसमाश्रिताः । ततः कलशप्रार्थना—देवदानवसंवादेमथ्य-माने महोदधौ । उत्पन्नोसि तदाकुंभविधृतोविष्णुनास्वयम् । त्वत्तः सर्वाणितीर्थानि देवाः सर्वेत्वयिस्थिताः । त्वयितिष्ठंति-भूतानित्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः । शिवःस्वयं त्वमेवासिविष्णुस्त्वं च प्रजापतिः आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाः सपैतृकाः त्वयि-तिष्ठंतिसर्वेपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमंयज्ञंकर्तुमीहे-जलोद्भव । सान्निध्यंकुरुमेदेवप्रसन्नोभवसर्वदा । इति प्रार्थना । पुनराचम्य यथासंभावितसंकल्पं कुर्यात् । अर्थाद्यदिपूर्वदिवसः स्यात्तदा मुख्ययजमानमाहूयादौवरणविधिनाकारयेत् पश्चात् द्वितीयमपिसंकल्पंतद्दिवसनिमित्तात्कार्यप्रमाणाच्चाचार्यः स्वयं कुर्यात् ॥

इसके बाद—मंगलके निमित्तसे घटादिकोंमें यथोचित सामान्यतया केवल श्रीगणेशजीका पूजन करे जैसे मूलपाठमें पूजाका प्रकार लिखा है। फिर आचमन कर यथायोग्य संकल्प करे अर्थात् जो पहिला दिवस हो तो मुख्य यजमानको बुलाकर पहले वरण—विधिसे संकल्प कराने बादमें द्वितीय संकल्प भी उस दिवसके निमित्तसे कार्यके अनुमानपर आचार्य आप करे।

यद्वा स्वस्यार्थमेव पूजनं स्यात्तदा प्रथमं नियमितदिवसानुच्चार्य पूजनस्य हेतुं चोच्चार्य स्वनाम्नैव संकल्पं कृत्वा पूजाकाले द्वितीयमपि संकल्पं तद्दिवसनिमित्तात्कार्यप्रमाणाच्च स्वनाम्नैव कुर्यात् ॥

यद्वाः—अपने निमित्तसे आपही कर्ता बने तो नियम किये हुए दिवसोंको उच्चारण करके अपने नामसे संकल्प करे बादमें पूजाके समय द्वितीय संकल्प उस दिवसके नाम और कार्यके अनुमानपर करे द्वितीय संकल्प जैसा नित्यप्रति करना उचित है पह पहले दिवस द्वितीय संकल्प गिनती है ॥

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीपार्थिवेश्वरचिंतामणिविद्यामंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता ब्रह्माऋषिः कामदुघागायत्रीछन्दः शीघ्रवरप्रदस्वरूपीपार्थिवेश्वरो देवता हौं बीजं श्रीं शक्तिः नम, कीलकं मम

सर्वाभीष्टकामनासिद्ध्यर्थं वा अमुकाभीष्टसिद्ध्यर्थं पूजने विनियोगः। यद्वा ममअमुकयजमानस्यामुककामनासिद्ध्यर्थं पूजने विनियोगः ॥

उसके बाद तीर्थादि जलोंसे विनियोग करे यथा–(ॐ अस्य श्रीपार्थिवेश्वरचिंतामणि) इत्यादि न्यास विधि पर्यंत जो विनियोग-मंत्र मूलपाठमें लिखा है, उसको पढकर पूजनका विनियोग छोडे विनियोग भी एक तो मुख्य अपने नामसे उस दशामें कि जब अपने निमित्तसे पूजन किया हो अथवा किसी यजमानके निमित्तसे किया हो तब यजमानका नाम लेकर करना चाहिये वे ही दो भेद मूलपाठसे समझने चाहिये (यथार्थ पहले विनियोग ही मुख्य संकल्प एक लेख्य मितिके समान है) विनियोगके बादमें न्यासविधि करनी चाहिये ॥

अन्य न्यासविधिः

ॐ हौं हीं जूँ स सर्वज्ञाय शिवाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ हौं हीं जूं सँ सर्वतृप्तशक्तिशिवाय तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ हौं हीं जूँ स, नित्यमलुप्तशक्तिशिवाय मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ हौं हीं जूँ सः दिव्यज्ञानशक्तिशिवाय अनामिकाभ्यांनमः ४ ॐ हौं हीं जूँ सः नित्यानन्दशक्तिशिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ हौं हीं जूँ स- अनंतशक्तिशिवाय करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः

६ (एवं हृदयादिः) ॐ हौं हीं जूँ सः सर्वज्ञाय शिवाय हृद-यायनमः १ ॐ हौं हीं जूँ सः नित्यमलुप्तशक्तिशिवाय शिखायै वषट् ३ ॐ हौं हीं जूँ सः दिव्यज्ञानशक्तिशिवाय कवचाय हुम् ४ ॐ हौं हीं जूँ सः नित्यानंदशक्तिशिवाय नेत्राभ्यां वौषट् ५ ॐ हौं हीं जूँ सः अनंतशक्तिशिवाय अस्त्राय फट् ६ इति न्यायविधिः ।

यथा-(ॐ हौं ह्री जूँ सः) इत्यादि छः मंत्रोंसे करन्यास और इन्हीं छः मंत्रोंसे हृदयादि अंगन्यास मूल पाठमें लिखे हैं, सो सब उसी प्रकारसे करने चाहिये ।

अथ ध्यानम्

ध्यायेनित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखि-लभयहरं पंचवक्त्रंत्रिनेत्रम् ॥ १ ॥ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारंभुजगेन्द्रहारम् । सदारमंतंहृदयारविन्देभवं भवानीस-हितंनमामि ॥ २ ॥ कैलासपीठासनमध्यसंस्थंभक्तैश्वनंद्यादिभि-रर्च्यमानम् । भक्तार्तिदावानलप्रमेयंध्यायेद्रुमालिंगितविश्वरू-पम् ॥ ३ ॥ वंदेमहेशंसुरसिद्धसेवितंकल्पद्रुमैः पूजितपादपंकजम् । विद्याप्रदंभक्तजनैकवंद्यं ध्यायेचिरंकामदुघंप्रसन्नम् ॥ ४ ॥

योयोगमायांग्रहितेवपुंसांज्ञानंविधत्तेऽखिलवस्तुनीह । तं विश्वनाथं कलिकल्मषघ्नं ध्यायेऽशिवारिंजगदेकदेहम् ॥ ५ ॥

इति मनसा सावधानेनध्यायेत्

यह करनेके बाद फिर ध्यान करे (ध्यायेनित्यं महेशं) इत्यादि पाँच मंत्र जो पाँच श्लोकोंद्वारा मूल पाठमें लिखे हैं उनको पढते हुए पुष्पांजलि हाथमें लेकर शिवजीका ध्यान मनमें बडी सावधानीसे करे पुष्पांजलि शिवशिखरपर चढा दे ।

अथ लिंगनिरूपणम्

तत्रादौगणेशगौरीस्वामिकार्तिकनंदिगणमूर्तीः आम्रमूलमृत्तिकया संशुद्धमृत्तिकया वा गोदुग्धनाभिधार्य पुनः शमीदर्भाश्वत्थाम्रमूलवल्मीकमृत्तिकामेकीकृत्य कर्पूरहरिद्राचूर्णयुतांमधुमिश्रितगोदुग्धेन वा दुग्धमिश्रितजलेन मधुसहितेन यथोक्तमंत्रेणाहरणं तत्राहरणमंत्रः ॐ हौं हीं जूं सः हराय नमः इति मृदाहरणम् ॥ १ ॥

उसके बाद लिंग बनानेका प्रचार करे । तहां पहले गणेश गौरी स्वामिकार्तिक नंदीगण इनकी मूर्तियां आम्रमूलकी मिट्टीसे अथवा संशुद्ध पीली मिट्टीसे गोदुग्धमें सानकर बनालेवे । उसके बाद छिउंकरी कुशा पीपल आंव इनकी जडकी मिट्टी और

सांपकी बांबीकी मिट्टी इन पांच मृत्तिकाओंमें कपूर और हलदीका चूर्ण मिलाकर शहद मिले हुए गोदुग्धसे साने अथवा गोदुग्ध मिले-हुए जलसेही शहद मिलाकर साने और यथोक्त मत्रसे उस मिट्टीका आहरण अर्थात् मर्दन करे । मर्दन करनेका यह मंत्र है यथा—[ॐ हौं ह्रीं जूँ सः हराय नमः] इति मृदाहरणम् ॥ १ ॥

अथ लिंगसंघटनमंत्रः

ॐ हौं ह्रीं जूँसः महेश्वरायनमः इतिसंघटनम् । अथ लिंग-हस्तांजलौकृत्वा आवाहयेत् ॐ हौं ह्रीं जूँ सः पिनाकपाणये नमः कैलासशिखराद्रम्यात्समागच्छ मम प्रभो । पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलदोभव ॥ १ ॥ देवदेवेशदेवेशं सर्वलोक-हितेरतम् यथोक्तरूपिणं देवं शंभुमावाहयाम्यहम् ॥ २ ॥ इत्या-वाह्य पूर्वरचितायां वेदिकायां शिखरोपरि ताम्रपात्रेस्थापयेत् । स्थापनमंत्रः ॐ हौं ह्रीं जूँ सः शूलपाणयेनमः इहस्थितो भव इति स्थापनम् ॥

फिर इस मर्दनकी हुई मिट्टीसे शिवलिंग बनावे, उसका यह मंत्र है यथा—[ॐ ह्रौं ह्रीं जूंसः महेश्वराय नमः] यह मंत्र मूलपाठमें भी सब लिखे हैं । इसके बादमें उस बनाये हुए शिव-लिंगकी हाथोंकी अंजलीमें शंभकर आवाहन करे, उसका यह मन्त्र मूलपाठमें लिखा है कि (ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणयेनमः

इत्यादि लेकर शंभुमावाहयाम्यहम्) यहांतक समझना, इस प्रकार आवाहन करके शिवशिखरपर ताम्रपात्रमें स्थापित करे. तब स्थापन करते समय यह मन्त्र पढे, यथा—(ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शूलपाणयेनमः इह स्थितोभव)

अथ प्राणप्रतिष्ठाविधिः

तत्रहस्ताभ्यांपुष्पाण्यक्षतांश्चगृहीत्वाहस्तौ द्वौ लिंगस्योपरिकृत्वेदं पठेत् । ॐ आं ह्रीं क्रौंयंरंलं वंशं षंसंहंशूलपाणेः प्राणा इहागच्छन्तुइहतिष्ठंतुशूलपाणेः सर्वेंद्रियाणि इहागच्छंतु इहतिष्ठंतु अत्राधिष्ठानं कुर्वंतु ॐ हौं हां ह्रीं यंरंलंवंशंषंसंहं सदाशिवस्य प्राणाइहागच्छन्तु इहतिष्ठंतु ॐ ह्रीं हौं सदाशिवस्य सर्वेंद्रियाणि मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणादय इमेऽसुष्मिन्पार्थिवलिंगे सुखं चिरंतिष्ठंतु स्वाहा । ॐ आं ह्रीं हौं सदाशिवस्यजीवइहस्थितिंकुरु ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिनाकिनेनमः यथोक्तरूपिशंभोइहागच्छ इह तिष्ठइहसंनिहितोभव सन्निचितोभव सन्निरुद्धोभव मम पूजां गृहाण । इतिप्रतिष्ठा ॥

इसके पीछे उस लिंगमें प्राणप्रतिष्ठाविधि करे अर्थात् दोनों हाथोंमें पुष्पाक्षत लेकर दोनों हाथ लिंगपर छायावत् आरोपित करके यह मंत्र पढे, अर्थात् मूल पाठमें ॐ आं ह्रीं क्रौंयंरंलवं इत्यादिसे लेकर इतिप्रतिष्ठापर्यंत जो प्राणप्रतिष्ठाकी विधिमें लिखा

है उसके सभी मंत्रोंको उच्चारण करे, फिर हाथ उठा ले, यह प्राणप्रतिष्ठाकी विधि है।

अथ प्रार्थनामंत्र

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा प्रार्थयेत् ॐ हौं ह्रीं जूँ सः पिनाकपाणये नमः स्वामिन्सर्वजगन्नाथयावत्पूजां करोम्यहम् । तावत्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन्संस्थितिं कुरु स्वाहा इति हस्तगत पुष्पाक्षतान् लिंगोपरिन्यसेत् । इति प्रार्थना अथ शिवलिंग दक्षिणभागे गणपत्यादिमूर्तीः संस्थाप्य यथोक्तमंत्रैः प्रपूजयेत् ततो वामांगे उमादेवीं स्नानादिविधिना संपूजयेत् तत्र मंत्रः—ॐ भगवत्यै उमादेव्यै शंकरप्रियायै नमः ॥

उसके बाद प्रार्थना करे, अर्थात् फूल अक्षत हाथमें लेकर (ॐ हौं ह्रीं जूँसः पिनाकपाणये नमः स्वामिन् सर्वजगन्नाथ) इत्यादि लेकर स्वाहापर्यंत जो मंत्र मूलपाठमें लिखा है, उसको पढकर हाथमें पुष्पाक्षत लेकर लिंगपर चढा दे, यह प्रार्थना हुई। इसके पीछे शिवलिंगके दाहिनी ओर गणपतिआदि मूर्तियां जो पहले बनाई थीं , उनको स्थापित करके अपने यथोक्त मंत्रोंसे सबका पूजन करे। फिर शिवजीके वाम अंगमें स्नान आदि विधिसे उमादेवीका पूजन करे, उसका यह मंत्र है—यथा (ॐ भगवत्यै उमादेव्यै शंकरप्रियायै नमः) ॥

अथ ध्यानम्

पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः पशुपतये नमः । ततो-मणिस्तंभविराजमानंहिरण्मयंद्वारकपाटतोरणम् । महार्हनीलाम-लवज्रवेदिकंतदेवध्यायेच्छिखरेशिवालयम् ॥ १ ॥ संतप्तहेमक-लशैर्बहुभिर्विचित्रैः प्रोद्भासितं स्फटिकसौधतलाभिरामम् । रम्यंचतच्छिवपुरंवरपीठमध्ये लिंगंचरत्नसहितंमनसाभिध्या-येत् ॥२॥ सर्वज्ञज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने । नमस्तेदेवदेवश-सर्वभूतहितेरत ॥ ३ ॥ अनन्तकांतिसंपन्नह्यनन्तासनसंस्थित । अनन्तशक्तिशोभाढ्यपरमेशनमोस्तुते ॥ ४ ॥ पाहिपाहिगुणा-तीतह्युत्पत्तिस्थितिकारक । सर्वार्थसाधनोपायविश्वेश्वरनमो-स्तुते ॥ ५ ॥ स्वभावान्निर्मलाकारसर्वव्याधिविनाशक । योगि-योगमहायोगिन्योगेश्वर नमोस्तुते ॥ ६ ॥ पातालेनांतरिक्षेदश-दिशि गगने सर्वशैले समुद्रे भूमौलोष्टेचकाष्ठेक्षितिजलपवनेस्था-वरेजंगमे वा । बीजं सर्वौषधीनामसुरसुरपथेपुष्पपत्रे तृणाग्रे सर्वव्यापीशिवोयंयदिवसतिपुमान्नास्तिदेवो द्वितीयः

अथ लिंगाष्टकप्रारंभः

ॐ ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगं निर्मलभास्करशोभि-तलिंगम् । जन्मजदुःखविनाशकलिंगं तं प्रणमामिसदाशिव-लिंगम् ॥ १ ॥ देवमुनीश्वरपूजितलिंगं कामविनाशनकारणलिं-

गम् । रावणदर्पविनाशनलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥२॥ सिद्धसुरासुरवन्दितलिंगं सर्वसुगंधसुलेपितलिंगम् । बुद्धिविवर्द्धनकारणलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ३ ॥ स्वर्णमहांमणिभूषितलिंगं दक्षकयज्ञविनाशनलिंगम् । नागप्रवेष्टितशोभितलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ४ ॥ कुंकुमचंदनलेपितलिंगं पंकजहारसुशोभितलिंगम् । संचितपापविनाशनलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ५ ॥ भावनभक्तिसुकेवललिंगं देवगणार्चितशोभनलिंगम् । भास्करकोटिप्रभाकरलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ६ ॥ अष्टदलोपरिशोभितलिंगं सृष्टिजहारजकारणलिंगम् । कष्टदरिद्रविनाशनलिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ७ ॥ सुरगुरुसुरगणपूजितलिंगं सुरवनपुष्पसदाशिवलिंगम् । परमपदंपरमार्जनालिंगं तं प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ ८ ॥ लिंगमध्येजगत्सर्वंत्रैलोक्यं सचराचरम् । लिंगं ब्रह्म परं नास्ति तस्माल्लिंगं प्रपूजयेत् ॥ ९ ॥

उसके बाद फिर ध्यान करे अर्थात् फूल अक्षत हाथमें लेकर (ॐह्रौंह्रींजूँसः पशुपतये नमः । ततोमणिस्तंभ) इत्यादि लेकर सात श्लोकोंपर्यंत मूलपाठमें जो ध्यानमंत्र लिखे हैं उनको पढे, और अर्थोंको समझ समझकर ध्यान करे जैसा रूप शिवजीका उन श्लोकोंमें कहाहै । और इसी ध्यानके साथमें लिंगाष्टक भी मूलपाठमें

आठ नौ श्लोकोमें जो कहा है, उसको भी अर्थ समझकर शिवजीके सन्मुख पढे ॥

अथ लिंगस्नानम्

पंचामृतेन गंगोदकेनवा अभावे गोक्षीरमिश्रितकूपोदकेन-चकारयेत्। तस्यमंत्रः ओं हौं हीं जूँ सः पशुपतयेनमः ओनमः शंभवायचमयोभवायचनमः शंकरायच मयस्करायचनमः शिवाय च शिवतरायच ॥ १ ॥

लिंगस्नान अर्थात् पंचामृतसे अथवा गंगोदकसे अथवा गंगाजलके न होनेमें गोदुग्ध मिले कूपोदकसेही स्नान करावे, उसका यह मंत्र है, यथा ॐ हौं ह्रीं जूं सः पशुपतये नमः ॐ नम शंभवायच मयो-भवायच नमः शंकरायचमयस्कराचनमः शिवतरायच ॥ १ ॥

अथ चंदनम्

ओं हौं हीं जूँसः शिवायचंदनंसमर्पयामि २ ओं हौं हीं जूंसः शिवायरोचनां समर्पयामि ३ एवमनेनैवमंत्रेणाक्षतान् ४ पुष्पाणि ५ एकादशदूर्वांकुरान् ६ एकादशबिल्वपत्राणि ७ धत्तूरफलत्रिकम् ८ धूपम् ९ एकादशवर्तिकृतदीपम् १० नैवे-द्यम् ११ नानाफलानि १२ आचमनम् १३ लवंगकर्पूरयुतं ताम्बूलम् १४ पूगीफलम् १५ दक्षिणा १६ कर्पूरदीपः ॥१७॥

ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवायचंदनं समर्पयामि इस मंत्रसे चंदन चढावे, और इसी मंत्रके अनुसार मूलपाठमें जो प्रत्येक वस्तुके मंत्र लिखे अथवा नहीं लिखे हैं, इनको भी योजना करके सब सामग्री यथाक्रमसे चढावे। उसका यह अनुक्रम है, कि चंदनके पीछे अक्षत फिर पुष्प दूर्वाके अंकुर ग्यारह विल्वपत्र ग्यारह धतूरेके फल तीन धूप दीपक ग्यारह बत्तीका, नैवेद्य नानाफल आचमन लवंग कर्पूरसहित तांबूल पूगीफल दक्षिणा कपूरकी ज्योति ॥

अथ आवरणपूजाप्रकारः

तत्राष्टमूर्तिपूजनं षोडशोपचारेण वा पंचोपचारेण वा तत्र सामान्यतया गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यान् मिश्रिभूतान् पात्रे कृत्वा तत्पात्रं वामकरे धृत्वा शिवलिंगस्य परितोष्टदलपद्मस्य यद्वा शिखराकारस्य पूर्वकर्णिकाद्यारभ्यैकैकमूर्तिपूजनं चरेत्। यथा–ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः पूर्वे १ ॐ भवाय जलमूर्तये- नमः ईशाने २ ॐ रुद्राय तेजोमूर्तये नमः उत्तरे ३ ॐ उग्राय वायुमूर्तयेनमो वायव्ये ४ ॐ भीमाय आकाशमूर्तयेनमः पश्चिमे ५ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः नैर्ऋत्ये ६ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमो दक्षिणे ७ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः आग्नेय्याम् ८ इत्यावरणपूजासंबंध्यष्टमूर्तिपूजनम् ॥

आवरण पूजा करे अर्थात् अष्टमूर्तिका पूजन षोडशोपचारसे करे अथवा पंचोपचारसेही साधारण रीतिसे गंध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्योंको एक पात्रमें मिलाकर उस पात्रको बांयें हाथमें लेकर शिवलिंगके सब और अष्टदल पद्म अथवा शिखराकारकी पूर्वकर्णिकासे लेकर आठों कर्णिकाओंपर एक एक मूर्तिका पूजन करे। उस पूजनके निमित्त (ओंशर्वायक्षितिमूर्तये) इत्यादि आठ मन्त्र मूलपाठमें जो लिखे हैं उनमेंसे एक एक मंत्र पढकर पूर्व आदि एक एक कर्णिकामें पूजन करे, अर्थात् सब सामग्री थोडी थोडी केवल एक एक बार चढावे। इति आवरण पूजायामष्टमूर्ति-पूजनम्।

अथ बलिदानम्

ततोदेशकालौस्मृत्वावाञ्छितार्थफलप्राप्तये कृतपूजनस्य सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्तिसंख्याकं यत्पदार्थं पूर्वमेव निश्चितं तदेकैकं तंदुलाक्षतसहितं प्रत्येकं षडक्षरेणशिवार्पणं कुर्यात्। अंतेतु उपहारार्थं जातीफलंमूलमंत्रेण दद्यात्। यथा ओं हौं हौं जूँ सः नमः शिवाय प्रसन्नपारिजातायस्वाहा। एतानि गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनि मयायथोक्तविधिनायानियानि समर्पितानि तैरेतज्जातीय फलबलिदानसमर्पणमात्रेण परात्माशिवो मयि प्रीयताम्। ममामुककामनामुकावधिदि

नांतरेण विधिहिमाविलम्बंकुरु शीघ्रमेव मम कार्यं साधयसाधय एषबलिः शिवाय सांगाय नमः स्वाहा ॥

इति बलिदानम्

उसके बाद नये सिरेसे फिर संकल्प करके लिये हुए पूजनकी सांगसिद्धिके लिये वह पदार्थ चढ़ावे, जो अपने वांछित अर्थका फल पानेके अर्थ यथाशक्ति और जितनी संख्यासे पहले निश्चित करके प्रथम तंत्रके अनुसार संचित किया हो । वह पदार्थ एक एक तंदुलाक्षत सहित षडक्षर मन्त्रसे शिवजीको अर्पण करे, परन्तु एक एक पदार्थके साथ एक एक अक्षतका होना यह उसी दशामें संभव है. कि जब फूल अथवा दूर्वानाल आदि वस्तुओंका मुख्य पदार्थ निश्चित किया हो अर्थात् यदि घृत दुग्ध आदिकी धारा हो तब आवश्यक नहीं, और यदि तंदुल आदि कोई अन्न हो तोभी नहीं, और अन्नोंमें एक मंत्रसे एकही दाना अन्नका नहीं किंतु जितना परिमाण उस अन्नका निश्चित हो चुका हो वही एक बार एक मन्त्रसे समर्पण करे, जैसे तंडुलोंकी पूजामें नौ प्रस्थ और दो पल मिलाकर एक मान कहा है, सोई एक मन्त्रसे समर्पण करे । इसके आगे देशकाल कार्यके अनुसार जैसा उचित हो वैसा अपनी बुद्धिसे विचार लेना कुछ निर्विकल्प नियमही नहीं है । यह पदार्थ नित्यके अनुमानसे समर्पण होचुकनेके बाद नित्यप्रति एक जाती-

फल बलि उपहारकी रीतिसे मूल मन्त्रसे समर्पण करे, यथा (ॐ ह्रौं ह्रीँजूँस] शिवायनमः प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा) इस मूलमन्त्रसे लेकर और (शीघ्रमेव मम कार्थं साधय) यहांतक जो बलिदान-विधि मूलपाठमें लिखी है, उसके द्वारा वह ऊर्ध्वोक्त जातीफल समर्पण करे। इति बलिदानम् ॥

अथ स्तोत्रम्

त्वं माता सर्वलोकानां त्वमेव जगतः पिता। त्वं भ्रातात्वं-सुहृन्मित्रं त्वंप्रियस्त्वंपितामहः ॥ १ ॥ नमस्ते भगवन्रुद्रभास्क-रामिततेजसे। नमोभवायदेवायरसायांबुमयायच ॥ २ ॥ सर्वा-यक्षितिरूपाय सदासुरभिरूपिणे। पशूनांपतयेतुभ्यं पावका-मिततेजसे ॥ ३ ॥ भीमायव्योमरूपाययशोरूपायतेनमः। महादेवायसोमायअनंताय नमो नमः ॥ ४ ॥ उग्राययजमाना-ययोगिनेकर्मयोगिने। नमस्तेकल्पवृक्षाय प्रत्यक्षफलदायिने॥५॥ पार्थिवानांचलिंगानांयन्मयापूजनंकृतम्। तेनमेभगवान्रुद्रो-वांछितार्थं प्रयच्छतु ॥ ६ ॥ शिवाग्रेपूजनं कृत्वास्तोत्रमेत-त्पठेत्सदा। सर्वार्थसाधनोपायमितिदेवैर्विनिश्चितम् ॥ ७ ॥ अथ मूलमंत्रजपः ॥ तत्रविनियोगः ॐ अस्य श्रीसदाशिवमंत्रस्य-वामदेवऋषिः पंक्तिश्छंदः। श्रीसदाशिवोदेवता। ममामुकफल-प्राप्तये जपे विनियोगः ॥

मूलपाठमें बलिदानके पीछे जो स्तोत्र सात् श्लोकोंका लिखा है, उसको शिवजीके सन्मुख पढे । उसके बादमें मन्त्रका विनि- योग जैसा मूलपाठमें लिखा है, वह करके मूलमंत्र उसीके आगे जैसा लिखा है, उसकी एक माला अष्टोत्तरी जपे ॥

मंत्रश्च । ॐ हौं ह्रीं जूँसः शिवायनमः प्रपन्नपारिजाताय- स्वाहा । इमंमंत्रंनित्यमष्टोत्तरशतंजपेत् । पश्चादनेननित्यमेका- दशाहुतीर्जुहुयात् ! तत्र प्रथमंहनुमन्मूर्तिं पताकापूजनं केवलं- सिंदूरादिधूपदीपनैवेद्यांततन्मंत्रेणैव कुर्यात् । अथैवंतीर्थविवर पूजनं कृत्वाग्निवेदिकायामग्निंसंस्थाप्यादौघृतेनैवचतुराहुतींद- द्यात् । यथा ॐ प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये ॥१॥ ॐ इन्द्रा- यस्वाहा इदमिन्द्राय ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ॥ ४ ॥ हुतशेषं तु स्रुवेणैव जल- पात्रे प्रक्षिपेत् ॥

उसके बाद उसी मूलमंत्रसे नित्यप्रति ग्यारह आहुति अग्निमें छोडे । वहां इस हवनसे पहले हनुमान्‌जीकी मूर्तिवाली पताकाका पूजन केवल सिंदूर आदि धूप दीप नैवेद्य पर्यंत हनुमन्मंत्र द्वारा करे, फिर तीर्थविवरका पूजन करके, अग्निकी वेदीमें अग्नि स्थापन करके पहिले चार आहुति केवल घृतसेही अग्निमें छोडे । और उन चारोंका हुतशेष उसी स्रुवामेंसे किसी जलपात्रमें छोडता जाय यथा-

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय ॥ ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ॥ ४ ॥

ततो गणेशादिभ्योपि नमः इत्यंतेन तत्तन्मंत्रेणैकैकं हव्येनैवाहुतिंदत्त्वापुनरपिस्वस्वमंत्रैर्नवग्रहाणामप्याहुतीर्दद्यात् । ततो मूलमंत्रेणैकादशाहुतींदद्यात् । अथकामपूरकमंत्रेणनित्यमेकविंशत्यधिकतसंख्ययाहुतीर्दद्यात् । कामपूरकमंत्रश्च ओंह्रौं ह्रीं जूँसः नमः शिवाय । त्वं दातासर्वलोकानां कृपां कुरुमयिप्रभो । अमुकार्थेस्वाहा ॥

उसके बाद गणेशादिकोंको भी एक एक आहुति उनके चतुर्थ्यन्त नामके अंतमें नमः स्वाहा जोडकर हव्यसे नवग्रहोंको भी अपने अपने मंत्रसे आहुति एक एकसे दे । फिर पूर्वोक्त मूलमन्त्रसे ग्यारह आहुति हव्यसे दे । उसके बाद कामपूरक मन्त्र जो मूलपाठमें लिखा है, उससे नित्यप्रति १२१ एक सौ इक्कीस आहुति हव्यसे देवे ।

अथ तर्पणविधिः

तत्र गोदुग्धगंगोदकाभ्यांसहजलेनैकादशदूर्वांकुरैः कुशाग्रभागैर्वादेवतीर्थेन तर्पयेत् । ॐ शिवाय नमः शिवंतर्पयामि १

ॐ भवायनमः भवंतर्पयामि २ ॐ ईशानायनमः ईशानंतर्पयामि ३ ॐ उग्रायनमः उग्रंतर्पयामि ४ ॐ मृडायनमः मृडंतर्पयामि ५ ॐ शशिशेखरायनमः शशिशेखरंतर्पयामि ६ ॐ शंकरानमः शंकरंतर्प० ७ ॐविश्वरूपायनमः विश्वरूपंतर्प० ८ ॐ कपर्दिने नमः कपर्दिनंत० ९ ॐ त्र्यंबकायनमः त्र्यंबकंतर्प० १० ॐ रुद्रायनमः रुद्रंतर्प० ११ ॥

उसके बाद तर्पणविधि करे अर्थात् गोदुग्ध और गंगाजल मिलेहुए जलसे ग्यारह दूर्वानालों अथवा ग्यारह कुशाग्रभागोंसे देवतीर्थद्वारा तर्पण करे। उन मन्त्रोंसे जो कि ग्यारह मन्त्र मूल पाठमें तर्पणके नामसे लिखे हैं।

अथ प्रार्थना—यत्रमूलमंत्रमुच्चार्य गोदुग्धशर्करामिश्रितजलस्य धारां दत्त्वा पुष्पांजलिं च समर्पयन् संप्रार्थयेत् यथा—ॐ ह्रौं ह्रींजूँसः शिवाय नमः प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा ॥

उसके बाद प्रार्थना करे, इस प्रकारसे कि पहले पूर्वोक्त मूलमंत्रका उच्चारण करके गोदुग्ध और शर्करा मिलेहुए जलकी धारा शिवजीपर देकर और पुष्पांजलीको समर्पण करते हुए प्रार्थनासंबंधी चार श्लोक जो मूलपाठमें लिखे हैं उनको पढकर प्रार्थना करे। फिर प्रदक्षिणाका मंत्र मूलपाठमें जो लिखा है उसको पढकर

प्रदक्षिणा करे । उसके बाद (हे चंद्रचूड) इत्यादि आठ नौ श्लोकोंका स्तोत्र जो नीचे मूल पाठमें लिखा है, उसे पढना चाहिये॥

नमःशिवायसांबायसगणायससूनवे । निवेदयामिचात्मनं लिंगस्यशरणागतम् ॥ १ ॥ नमः शिवायसांबायकारणत्रय- हेतवे । निवेदयामिचात्मानंत्वंगतिःपरमेश्वर ॥ २ ॥ तावकस्त्व- द्गतप्राणस्त्वच्चित्तोहंसदामृड । कृपानिधइतिज्ञात्वाभूतनाथप्रसी- दमे ॥ ३ ॥ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानाज्जपपूजादिकं मया । कृतंतद- स्तुसफलं कृपयातवशंकर ॥ ४ ॥ अथप्रदक्षिणा-यानियानिच- पापानि दुःखानिचपरमेश्वर । तानितानिविनश्यंतुप्रदक्षिणपदेपदे । इतिप्रदक्षिणीकृत्य । हे चंद्रचूडेत्यादिस्तोत्रं पठेत् ।

तद्यथा–हेचन्द्रचूडमदनांतक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेशशंभो । भूतेशभीतभयसूदन मामनाथं संसारदुः- खगहनाज्जगदीशरक्ष ॥१॥ हेपार्वतीहृदयवल्लभचन्द्रमौले भूता- धिप स्मरहरत्रिदशाधिनाथ । हेवामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे- संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ २ ॥ हे नीलकंठ वृषभध्वज पंचवक्त्रलोकेशशेषवलयप्रमथेशशर्व । हे धूर्जटेपशुपते गिरिजा- पतेमां संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ३ ॥ हे विश्वनाथ शिव शंकरदेवदेवगंगाधर प्रमथनायक नंदिकेश । बाणेश्वरांधकरिपो हरलोकनाथ संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ४ ॥ वाराणसी-

पुरपतेमणिकर्णिकेश वीरेश दक्षमखकाल विभोगणेश। सर्वज्ञ-सर्वहृदयैकनिवासनाथ संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ५ ॥ श्रीमन्महेश्वरकृपामय हे दयालो हेव्योमकेशशितिकंठगणाधिनाथ। भस्मागरागनृकपालकलापमाल संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ६ ॥ कैलासपर्वतनिवासवृषाकपीश मृत्युंजय त्रिनयनत्रिजगन्निवास नारायणप्रियदयामय शक्तिनाथसंसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ७ ॥ विश्वेशविश्वभवनस्थितिविश्वरूपविश्वात्मकत्रिभुवनैकगुरोभवेश। हे विश्ववंद्य करुणामयदीनबंधो संसारदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ८ ॥ गौरीविलासभुवनायमहेश्वरायपंचाननायशरणागतकल्पकाय ! सर्वायसर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखगहनाज्जगदीशरक्ष ॥ ९ ॥ इतिश्रीमच्छंकराचार्यविरचितं शिवस्तोत्रं संपूर्णम् इति श्रीस्तुत्वा गल्लनादंकुर्यात्। अथापिशक्तिश्चेत्तर्हि शिवकवचमपिश्रावयेद्वा !

उसके बाद गाल बजाकर गल्लनादसे शिवजीको प्रसन्न करे। इसके आगेभी यदि अपनेमें शक्ति अथवा श्रद्धा विशेष हो तो शिवकवचका भी पाठ सुनावे, अथवा नहीं। उसके बाद विसर्जन करे।

अथ विसर्जनम्

पुष्पाक्षतानि गृहीत्वा—ॐ महादेवाय यजमानमूर्तये नमः कृताकृताज्ञसां क्षमस्वममकृतां पूजां च हीत्वाममहृदि महाकैलासेवायथासुखंतिष्ठ ।

इति श्रीसकामशिवपूजाविधानं समाप्तम् ।

फूल अक्षत हाथमें लेकर विसर्जनका मंत्र जो मूल पाठमें लिखा है उसको पढ़ते हुए शिवजीपर अर्पण करे । और किंचित् उस पात्रको नीचेसे स्पर्श करे, जिसमें शिवलिंग विराजमान हो ।

इति श्रीसकामशिवपूजनविधानं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

